सम्राट कुमारपाल और हेमचन्द्राचार्य

पिछले भाग में आपने पढ़ा-गुजरात का शासन सँभालते ही कुमारपाल ने आचार्य हेमचन्द्र सूरि से प्रेरणा पाकर राज्य में हिंसा, मद्यपान आदि दुर्व्यसनों पर रोक लगा दी। अब उससे आगे की कहानी इस भाग में पढ़िए—

एक दिन महाराज कुमारपाल राजसभा में बैठे थे। एक विद्वान् ने राजा की प्रशंसा में एक संस्कृत श्लोक कहा—

पर्जन्य इव हि भूतानामाधार पृथिवीपति :।[१]

सुन्दर!

बहुत सुन्दर!

वाह! राजा को मेघ की उपमा[२]? कितना सुन्दर श्लोक है?

राजा के मुँह से कवि की प्रशंसा सुनकर विद्वान् मंत्री कपर्दी अचानक कुछ उदास हो गया। राजा ने पूछा—

मंत्रीवर! आप अचानक गम्भीर क्यों हो गये? क्या मैंने कुछ गलत कह दिया?

नहीं महाराज! बस, ऐसा ही...

बाद में एकान्त में मंत्री ने निवेदन किया—

महाराज! आपने राजसभा में "उपमा" को "उपम्या" शब्द बोला। आपके मुख से अशुद्ध उच्चारण केवल भाषा दोष ही नहीं, अपितु राजा की प्रतिष्ठा में भी कमी करता है।

ओह मंत्रीवर! तो आपकी उदासी का यह कारण था। आपकी चेतावनी उचित है। मैं अपना उच्चारण शुद्ध करूँगा।

१. राजा मेघ की भाँति प्रजा के जीवन का आधार होता है। २. 'उपम्या' शब्द अशुद्ध है, शुद्ध उच्चारण है उपमा।

दूसरे दिन कुमारपाल हेमचन्द्राचार्य के पास आकर बोला—

गुरुदेव ! क्या मैं संस्कृत सीख सकता हूँ ?

राजन् ! क्यों नहीं।

गुरुदेव ! मैं पचास वर्ष का हो गया हूँ। क्या अब विद्या आ जायेगी मुझे ?

मनुष्य का शरीर वृद्ध होता है, बुद्धि और मनोबल नहीं ! आप आज से ही प्रयत्न प्रारम्भ कीजिए।

कुमारपाल ने आचार्यश्री के मुख से संस्कृत का प्रथम पाठ लिया और अध्ययन में जुट गये। वह धीरे-धीरे आचार्यश्री के पास योगशास्त्र, वीतराग स्तोत्र आदि संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन भी करने लगे।

राजन् ! अध्ययन में आपकी रुचि देखकर लगता है आप संस्कृत भाषा के विद्वान् बन जायेंगे।

एक दिन कुमारपाल ने आचार्यश्री के हाथों में कुछ ताड़पत्र देते हुए कहा—

गुरुदेव ! आपके आशीर्वाद से मैंने तीर्थंकरों की स्तुति का काव्य बनाया है।

कृति पढ़कर हेमचन्द्राचार्य प्रसन्न होकर बोले—

वाह! कितनी सुन्दर भक्तिपूर्ण रचना है।*

राजन्! जहाँ लक्ष्य के प्रति दृढ़ श्रद्धा और निष्ठा होती है वहाँ सफलता का वरदान निश्चित मिलता है।

गुरुदेव! जैसे मुझे आपके ग्रंथों को पढ़ने से आनन्द मिलता है, वैसे दूसरों को भी मिले। इसलिए मैं इनका प्रचार करना चाहता हूँ।

राजन्! विचार उत्तम है परन्तु इसके लिए साहित्य की प्रतिलिपियाँ तैयार करनी होंगी।

साहित्य सर्जना

आचार्यश्री साहित्य सर्जना में जुट गये। उनके दोनों तरफ नौ-दस शिष्य कागज कलम लेकर बैठ गये। आचार्यश्री बोलते जाते, शिष्य ताड़पत्रों पर लिखकर लिपिकारों को प्रतिलिपियाँ बनाने के लिए देते रहते।

आचार्यश्री की आज्ञा पाकर राजा ने अपने अधिकारी को आदेश दिया—

शास्त्र लिखने के लिए कश्मीर के सुन्दर स्वच्छ ताड़पत्र और स्याही, कलम आदि लेखन सामग्री की व्यवस्था करो।

* इस स्तुति रूपी बत्तीसी का प्रथम श्लोक इस प्रकार है—
यत्राखिलाः श्री श्रितपादपद्मं, युगादिदेवं स्मरणाङ्गरेणं।
सिद्धिर्ममाप्यात् जिन! तं भवन्तं, युगादिदेवं प्रणतोऽस्मि नित्यम्॥

इसका भाव है—हे जिनेश्वर! लक्ष्मी प्रकार की लक्ष्मी आपके चरण-कमलों का आश्रय लेकर बैठी है। आपका स्मरण करता हुआ मनुष्य अवश्य मुक्ति प्राप्त करता है। मैंने श्री जिनकी भक्ति से सफलता रूप सिद्धि प्राप्त की, उन युगादिदेव को सदा प्रणाम करता हूँ।